

डायरी का एक पन्ना



कक्षा—दस

पाठ—तीन

लेखक—सीताराम सेक्सरिया

उद्देश्य

- ❖ स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं के योगदान का ज्ञान
- ❖ डायरी लेखन विधा से परिचय

लेखक का परिचय

1892 में राजस्थान के नवलगढ़ में जन्मे सीताराम सेकसरिया का अधिकांश जीवन कलकत्ता (कोलकाता) में बीता। व्यापार—व्यवसाय से जुड़े सेकसरिया अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक और नारी शिक्षण संस्थाओं के प्रेरक, संस्थापक और संचालक रहे। स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी की। वह गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस के करीबी रहे। सत्याग्रह आंदोलन के दौरान जेल यात्रा भी की। कुछ साल तक आज़ाद हिंद फौज के मंत्री भी रहे। भारत सरकार ने उन्हें 1962 में पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया।

डायरी का एक पन्ना

अंग्रेजों से देश को मुक्ति दिलाने के लिए महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आंदोलन छेड़ा था। इस आंदोलन ने जनता में आज़ादी की अलख जगाई। 26 जनवरी 1930 को गुलाम भारत में पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। आज़ादी के ढाई साल बाद, 1950 में यही दिन हमारे अपने गणतंत्र के लागू होने का दिन भी बना। इस पाठ में लेखक सीताराम सेकसरिया की डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखाजोखा है।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस और स्वयं लेखक सहित कलकत्ता के लोगों ने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस किस जोश-खरोश से मनाया, अंग्रेज़ सरकार ने इसे अपराध मानते हुए उन लोगों पर और विशेषकर महिला कार्यकर्ताओं पर जुल्म ढाए। यह पाठ हमारे क्रांतिकारियों की कुर्बानियों की याद दिलाता है।





26 जनवरी 1930 को मनाए गए स्वतंत्रता दिवस में कलकत्तावासियों ने उत्साह से भाग नहीं लिया था। इस लिए 26 जनवरी 1931 का दिन उनके लिए विशेष महत्त्व रखता था। जिसके लिए विशेष तैयारियाँ पहले से की गई थीं। इस वर्ष केवल प्रचार में दो हजार रुपये खर्च किये गये थे। कार्यकर्ताओं ने घर जा-जाकर लोगों को समझाया था, उन्हें उत्साहित किया था।

मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि मानो स्वतंत्रता मिल ही गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। हर ओर उत्साह और नवीनता महसूस होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे तथा सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। पुलिस को इस काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था।



मोनूमेंट के नीचे शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को प्रातः छह बजे से ही पुलिस ने घेर लिया था पर तब भी कई जगह तो प्रातः ही झंडा फहराया गया। श्रद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा और लोगों को मारा या हटा दिया। तारा सुंदरी पार्क में कांग्रेस कमेटी के युवा मंत्री हरिश्चंद्र झंडा फहराने गए पर वे भीतर न जा सके। वहाँ काफी मारपीट हुई और दो-चार आदमियों के सिर फट गए। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकला गया जिसमें बहुत-सी लड़कियाँ थीं उनको गिरफ्तार कर लिया। 11 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झंडोत्सव मनाया। जानकीदेवी, मदालसा आदि भी शामिल थीं। दो-तीन बजे कई आदमियों को पकड़ लिया गया। जिसमें मुख्य पूर्णोदास और पुरुषोत्त राय थे।

26 जनवरी 1931 की यह सभा ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। तो दूसरी तरफ कौंसिल की ओर से नोटिस निकल गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।





चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू जुलूस लेकर आए। उनको चौरंगी पर ही रोका गया, पर भीड़ की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को रोक नहीं सकी। मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दीं, बहुत आदमी घायल हुए, सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं। सुभाष बाबू बहुत ज़ोरों से वंदे मातरम् बोल रहे पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी के फटे हुए सिर से खून बह रहा था। इधर यह हालत थी और उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर झंडा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थीं।

सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से चलीं। साथ में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। कुछ देर शान्त रहकर पुलिस ने फिर से डंडे चलाने शुरू कर दिए। अबकी बार भीड़ ज्यादा होने के कारण बहुत आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया। पुलिस ने उनको पकड़कर लालबाजार भेज दिया। स्त्रियों का एक भाग आगे बढ़ा जिसका नेतृत्व विमल प्रतिभा कर रही थीं। उनको बहू बाजार के मोड़ पर रोका गया। उस दिन कुल मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गई थीं। बाद में रात को नौ बजे सबको छोड़ दिया गया। कलकत्ता में आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ गिरफ्तार नहीं की गई थीं।



अस्पताल गए, लोगों को देखने से मालूम हुआ कि 160 आदमी तो अस्पतालों में पहुँचे और जो लोग घरों में चले गए, वे अलग हैं। इस प्रकार दो सौ घायल ज़रूर हुए थे। पकड़े गए आदमियों की संख्या का पता नहीं था, पर लालबाज़ार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। उस दिन जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ था। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर जो कलंक था कि वहाँ काम नहीं हो रहा है वह उस दिन बहुत अंश में धुल गया और लोग सोचने लग गए कि वहाँ भी बहुत सा काम हो सकता है।



डायरी का एक पन्ना—स्मरणीय बिन्दु

